• बाल कविता...

आँधी आयी...

भागो भाई, भागो भाई,
आँधी आयी, आँधी आयी!
गर्द-भरी गलियाँ, चौरस्ते,
राही भूल गये हैं रस्ते।
फँसे बीच में हम सब बच्चे,
उड़ीं किताबें, लुढ़के बस्ते।
छज्जे पर जा अटकी टाई।
आँधी आयी, आँधी आयी!
इक्का लेकर भागा घोड़ा,
कोचवान को पीछे छोड़ा।
आसमान में उठे बगूले,
बिछड़ गया चिड़िया का जोड़ा।
धूल-भरी बदली है छायी।
आँधी आयी, आँधी आयी!
भैंस तुड़ाकर भागी खूँटा,
ग्वाले का मटका भी फूटा।
छड़ी गिर पड़ी दादा जी की,
दादी जी का चश्मा टूटा।
कहीं न कुछ देता दिखलाई।
आँधी आयी, आँधी आयी!

■ सूर्यकुमार पांडेय

• चुटकुले...

डॉक्टर– चश्मा किसके लिए बनवाना है?
बब्लू– टीचर के लिए।
डॉक्टर– पर क्यों?
बब्लू– क्योंकि उन्हें मैं हमेशा गधा ही नजर आता हूं।

पूजा के समय पत्नी ने पति से पूछा।
पत्नी– सुनो जी आपको आरती याद है न?
पति– हां... वो पतली सी, वही न?
इसके बाद भगवान की बाद में, पति की 'पूजा' पहले हुई।

टीचर– 'संगठन में ही शक्ति है' का एक अच्छा सा उदाहरण दो?
छात्र– जेब में एक बीड़ी हो तो टूट जाती है और पूरा बंडल हो तो नहीं टूटता। ...मास्टर जी बेहोश।

• जानकारी...

सूरज

क्या आपने कभी देखा है कि सुबह और शाम के वक्त सूरज बहुत बड़ा दिखाई देता है, जबकि दिन के समय उसका वो छोटा नजर आता है? आमतौर पर हर व्यक्ति ने ये नजारा कभी न कभी तो जरुर देखा होगा, लेकिन सवाल ये उठता है कि सूरज सच में उस समय बड़ा हो जाता है, या फिर यह सिर्फ हमारी नजर का भ्रम होता है? सूरज का आकार

कभी नहीं बदलता, लेकिन यह घटाना जिसे हम सन्सेट इल्यूजन या अप्टिकल इल्यूजन कहते हैं, हमारे दिमाग और वातावरण के कारण होती है। चलिए आज समझते हैं कि सुबह और शाम को सूरज बड़ा क्यों दिखाई देता है और इसके पीछे का वैज्ञानिक कारण क्या है।

सूरज का आकार हमारे नजर में हमेशा एक जैसा होता है। बता दें सूरज का व्यास करीब 1,391,000 किलोमीटर (1.39 मिलियन किलोमीटर) होता है, जो पृथ्वी से लगभग 109 गुना बड़ा है। सूरज का आकार स्थिर है और इसके व्यास में कुछ नहीं बदलता। फिर भी हमें यह अक्सर लगता है कि सुबह और शाम के वक्त सूरज बहुत बड़ा दिखता है। क्या यह सच है कि सूरज का आकार बदलता है? तो बता दें ऐसा नहीं है, यह केवल एक ऑप्टिकल इल्यूजन है, जो हमारी आंखों और दिमाग की नजर में होने वाली कुछ मानसिक प्रक्रियाओं की वजह से होता है।

जब सूरज सुबह और शाम के समय आसमान में होरिजोन के पास होता है, तो वह बहुत बड़ा दिखाई देता है। इसे हम होराइजन इल्यूजन या सन्सेट इल्यूजन के नाम से भी जानते हैं. यह एक दृश्य भ्रम है, जो मस्तिष्क की प्रक्रिया और वातावरण की स्थिति के कारण होता है।

दरअसल हमारे मस्तिष्क को यह लगता है कि सूरज तब दूर होता है जब वो आसमान में ऊंचाई पर होता है, जबकि जब सूरज होरिजोन के पास होता है, इसलिए हमें यह लगने लगता है कि वह बहुत पास है। इसलिए जब सूरज होरिजोन के पास होता है, तो दिमाग उसे ज्यादा बड़ा और करीब समझता है. हालांकि, असल में सूरज की स्थिति और दूरी में कोई बदलाव नहीं होता, लेकिन हमारा दिमाग इसे इस तरह से समझता है कि सूरज बड़ा दिखता है. सूरज के पास मौजूद वातावरण, जैसे वायुमंडलीय गैसें, धूल, और जलवाष्प, सूरज की किरणों को फैलाने में मदद करती हैं। जब सूरज होरिजोन के पास होता है, तो उसकी किरणें पृथ्वी की वायुमंडलीय परत से लंबी दूरी तय करती हैं, जिससे सूरज की रोशनी में ज्यादा फैलाव होता है। यह सूरज के रंग को भी प्रभावित करता है, जिससे वो ज्यादा लाल, नारंगी या गुलाबी रंग में दिखता है। जब सूरज आसमान की ऊंचाई पर होता है, तो वायुमंडल की परत छोटी होती है और सूरज की रोशनी का फैलाव कम होता है, जिससे सूरज छोटा और सफेद दिखाई देता है।

• गोनू झा

पंडिताइन का सहारा

गतांक से आगे...

संयोग की बात थी कि उस दिन गोनू झा तब तक दरबार में नहीं पहुँचे थे जिसके कारण दरबारियों को अपना जाल फैलाना आसान हो गया था।

तीसरे दरबारी का आह्वान सुनने के बाद थोड़ी देर तक दरबार में सन्नाटा-सा छाया रहा।

सब को चुप देखकर महाराज ने स्वयं कहा -'बताइए! आप लोगों के पास कोई जानकारी हो तो आवश्य बताइए!'

तब दरबार का सबसे स्वस्थ कारिंदा बोला -'महाराज, मैं भी एक बार बहुत बीमार हो गया था। वैद्य की चिकित्सा का मेरे रोग पर कोई असर नहीं हुआ तब मेरे शिकारी मामा ने मेरे लिए शेर के दूध की व्यवस्था की। बाघ का मांस घिसकर शेर के दूध में सुबह-शाम चटाया गया जिससे मैं फिर से सेहतमंद हो गया।'

महाराज में एक अजीब- सी उत्सुकता पैदा हो गई। उन्होंने पूछा - 'मगर शेर का दूध और बाघ का मांस आएगा कहाँ से?'

तभी एक दरबारी ने कहा-'महाराज! यह काम तो कोई सूझ-बूझवाला आदमी ही कर सकता है।'

दूसरे ने कहा -'दरबार में गोनू झा से अधिक सूझ-बूझ वाला व्यक्ति और कोई नहीं है।

महाराज को भी यह बात ठीक लगी। वे गोनू झा की प्रतीक्षा करने लगे।

गोन झा जैसे ही दरबार में आए, वैसे ही महाराज ने उन्हें आज्ञा दी - 'पंडित जी, मेरे लिए प्रतिदिन एक गिलास शेर के दूध की व्यवस्था करें और हो सके तो थोड़े से बाघ के मांस की भी।'

गोनू झा अचरज में पड़ गए और कुछ कहना चाहा मगर महाराज ने उन्हें कहा-'अगर मगर कुछ भी नहीं, यह व्यवस्था आपको करनी ही पड़ेगी।'

गोनू झा चुप रह गए। कहते भी क्या? दरबार से लौटकर घर आए तो अनमने से रहे। पंडिताइन ने उन्हें चिन्तित देखकर पूछा कि आखिर बात क्या है, तो उन्होंने पूरी बात बता दी। पंडिताइन ने उन्हें कहा कि वे चिन्तित नहीं हों। सामान्य रहें। आज रात में ही वह खुद इस समस्या का निदान कर देगी। गोनू झा ने पूछा भी कि मगर कैसे? तो पंडिताइन ने उन्हें कहा कि इसकी चिन्ता वे नहीं करें कि कैसे, बस कल से प्रसन्नचित्त होकर समय पर दरबार जाएँ। इसके बाद गोनू झा को भोजन करा लेने के बाद पंडिताइन एक थापी और गंदे कपड़ों की एक पोटली लेकर महाराज के सरोवर पर पहुँच गई। महाराज के कमरे के निकट पड़ने वाले सरोवर के पाट पर बैठकर वह जोर-जोर से कपड़ा थापी से पीटने लगी। थापी की आवाज से महाराज की नींद खुल गई और उन्होंने पंडिताइन को पकड़वाकर अपने पास बुलवा लिया। पंडिताइन को देख महाराज अचरज में पड़ गए और पूछा -'क्या बात है? इतनी रात को आप राज-सरोवर में कपड़ा धो रही हैं ?'

पंडिताइन ने जवाब दिया-'महाराज! दरबार से लौटते ही पंडित जी ने एक बच्चा जना है। उनकी तीमारदारी के बाद गंदे कपड़े धोने इस समय यहाँ आ गई।'

महाराज चकराए 'अरे! क्या बोल रही हैं आप? मर्द भी कहीं बच्चा देता है? असम्भव।'

तपाक से पंडिताइन ने कहा -'जब शेर दूध दे सकता है, तो मर्द बच्चा क्यों नहीं पैदा कर सकता?'

पंडिताइन की बात सुनकर महाराज लज्जित हुए।

दूसरे दिन दरबार में उन दरबारियों की शामत आ गई जिन्होंने शेर के दूध की सलाह दी थी। उनकी हालत देखकर गोनू झा मन ही मन हँस रहे थे।

-समाप्त

तब दरबार का सबसे स्वस्थ कारिंदा बोला – 'महाराज, मैं भी एक बार बहुत बीमार हो गया था। वैद्य की चिकित्सा का मेरे रोग पर कोई असर नहीं हुआ तब मेरे शिकारी मामा ने मेरे लिए शेर के दूध की व्यवस्था की।

बाघ का मांस घिसकर शेर के दूध में सुबह– शाम चटाया गया जिससे मैं फिर से सेहतमंद हो गया।'

महाराज में एक अजीब– सी उत्सुकता पैदा हो गई। उन्होंने पूछा – 'मगर शेर का दूध और बाघ का मांस आएगा कहाँ से?'

• रोचक...

दिमाग पढ़ने वाली मशीन

अब एलन मस्क की कंपनी न्यूरालिंक ने हाल ही में अपने प्रत्यारोपित इलेक्ट्रोड के लिए मानव परीक्षण शुरू करने ऐलान किया है। इसका उदेश्य न्यूरॉन्स से संकेतों को पढ़ना है। इस प्रोजेक्ट पर एलन मास्क का कहना है कि उनका दीर्घकालिक लक्ष्य मानवों और आर्टिफिशियल इंडेलीजेंस को साथ लाना है। इसके अलावा सिंक्रोन ने माइक्रोइलेक्ट्रोड का आविष्कार किया है, जिसे मस्तिष्क में गहरी रक्त वाहिकाओं के माध्यम से पारित करके स्थापित किया जा सकता है, जिससे ओपन ब्रेन सर्जरी की आवश्यकता नहीं होगी। साथ ही अगर ऐसा हुआ तो भविष्य में इंसानी दिमाग को पढ़ना आसान हो जाएगा। आप अपने दिमाग को प्राइवेट नहीं रख पाएंगे। आपको जानकार हैरानी होगी कि इस तकनीक के बाद अगर आपने अपने दिमाग में कुछ सोचा है तो वह महज आपके तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसे दूसरा इंसान भी पढ़ने में सक्षम होगा।

• नीदरलैंड...

वैश्विक नींद सर्वेक्षण के मुताबिक, सबसे अधिक सोने वाले लोगों में नीदरलैंड टॉप पर काबिज है। नीदरलैंड्स के लोग औसतन 8.1 घटे तक सोते हैं। इसके बाद दुनिया में दूसरे स्थान पर फिनलैंड है, जहां के लोग रोजाना 8 घटे की नींद लेते हैं। नीदरलैंड्स और फिनलैंड के बाद तीसरे नंबर पर संयुक्त रूप से ऑस्ट्रेलिया और फ्रांस है। ऑस्ट्रेलिया और फ्रांस के लोग प्रतिदिन 7.9 घटे की नींद पूरी करते हैं।